भगवद् गीता का ज्ञान – (8)

" मोक्ष को ले जाने वाले 26 दैवी गुण और नरक को ले जाने वाले 6 राक्षसी गुण "

- श्रीमद्भगवद्गीता के 16वें अध्याय के छठे श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं –

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ॥१६:६, प्रथम भाग ॥

अर्थात - "इस संसार में दो ही प्रकार के प्राणी हैं - दैवी प्रकृति वाले और आसुरी (राक्षसी) प्रकृति वाले।"

- उसी अध्याय के पांचवें श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण दैवी और राक्षसी गुणों के बारे में कहते हैं –

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ॥१६:५, प्रथम भाग ॥

अर्थात - "दैवी सम्पदा (दैवी गुण) मोक्ष (संसार से मुक्ति) के लिए और आसुरी सम्पदा (राक्षसी गुण) बंधन के लिए (अर्थात संसार के बंधन का कारण) माने गए हैं।"

- 16वें अध्याय के पहले, दूसरे और तीसरे श्लोकों में भगवान् श्रीकृष्ण बताते हैं कि दैवी गुण कौन से हैं –

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः । दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१६:१॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् । दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥१६:२॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता । भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥१६:३॥

अन्तिम तीन श्लोकों में नीचे लिखे 26 गुणों को दैवी सम्पदा (या दैवी गुण) बताया गया है -

1. अभय (निडरता)	2. अंतःकरण की शुद्धि
3. तत्त्व-ज्ञान	4. सात्त्विक दान
5. इन्द्रियों का दमन	6. यज्ञ
7. स्वाध्याय	8. तप (तपस्या)
9. अंतःकरण की सरलता	10. अहिंसा
11. सत्य का पालन	12. अक्रोध (क्रोध न करना)
13. त्याग	14. शांति
15. निंदा-चुगली न करना	16. प्राणी-मात्र पर दया
17. अलोलुपता (न ललचाना)	18. अंतःकरण की कोमलता
19. लज्जा	20. अचपलता (मानसिक स्थिरता)
21. तेज (बल)	22. क्षमा
23. धृति (धैर्य)	24. पवित्रता
25. अद्रोह (वैर-भाव न होना)	26. सम्मान की इच्छा न होना

- 16वें अध्याय के चौथे श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण बताते हैं कि राक्षसी गुण कौन से हैं –

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च । अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥१६:४॥

अन्तिम श्लोक में नीचे लिखे 6 गुणों को आसुरी सम्पदा या राक्षसी गुण बताया गया है -		
(1) दम्भ	(2) घमण्ड	(3) अभिमान
(4) क्रोध	(5) कठोरता	(6) अज्ञान

- 8वें श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण आसुरी (राक्षसी) प्रकृति वाले पुरुषों के बारे में आगे कहते हैं –

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् । अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥१६:८॥

अर्थात - "वे (ऐसे पुरुष) कहा करते हैं कि संसार सर्वथा असत्य, बिना किसी मर्यादा और बिना ईश्वर के, अपने-आप, केवल स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न है। इसलिए केवल काम ही इसका कारण है, इसके सिवा और क्या है? (अर्थात, काम के अतिरिक्त संसार का कोई कारण हो ही नहीं सकता)" **(गीता - 16:8)**

- 16वें श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण आसुरी (राक्षसी) प्रकृति वाले पुरुषों की अंत-गति के बारे में बताते हैं –

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥१६:१६॥

अर्थात - "अनेक प्रकार से भ्रमित चित्त वाले, मोह-जाल में फँसे हुए तथा विषय भोगों में अत्यन्त आसक्त, आसुरी प्रकृति वाले लोग भयंकर नरक में गिरते हैं।" **(गीता - 16:16)**